आज का भारत

स्वतन्त्र जैन जालन्धर

हमारा हक है हमारी दौलत़ किसी के बाबा का जर नहीं है,
है मुल्क भारत वतन हमारा, किसी की खाला का घर नहीं है।
ये आत्मा तो अजर-अमर है निसार तन-मन स्वदेश पर है
है चीज क्या जेल, गन मशीनें, कजा का भी हमको डर नहीं है।
न देश का जिनमें प्रेम होवे, दु:खी के दु:ख से जो दिल न रोए,
खुशामदी बन के शान खोए वो खर है हरगिज बशर नहीं है।
हुकूक अपने ही चाहते हैं न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं,
तुझे तो ऐ खुदगरज ! किसी की भलाई मद्देनजर नहीं है।
हमारी नस-नस का खून तूने बड़ी सफाई के साथ चूसा,
है कौन-सी तेरी पालिसी वो कि जिसमें घोला जहर नहीं है।
बहाया तूने हैं ख़ूँ उसी का, है तेरी रग-रग में अन्न जिसका,
बता दे बेदर्द तू ही हक से, सितम यह है या कहर नहीं है।
जो बेगुनाहों को सताता, कभी न वो सुख से बैठ पाता,
बड़े-बड़े मिट गए सितमगर, तुझे क्या इसकी खबर नहीं है।

वंदे मातरम

यह कौमी तराना 1947 से पूर्व अंगरेज हकूमत द्वारा प्रतिबन्धित था। लोकतन्त्र में वर्तमान सरकार उसका अनुसरण न करे।

स्वतन्त्र जैन जालन्धर

9855285970 swatantarjain@gmail.com 22.5.2021

देश व्यवस्था से चलता है, न कि धर्म से, धर्म देश से चलता है।

जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में पृथ्वी पर अनेकों देश हैं, जिनकी है अपनी संस्कृति, सभ्यता व अपना धर्म है परन्तु भारत देश की संस्कृति, सभ्यता व धर्म सब से प्रचीन है जो करोड़ो वर्ष पुराना है। लम्बे अंतराल में अनेकों घटनायें हुई होगीं परन्तु भारतीय संस्कृति, सभ्यता व धर्म यथावत रहा, श्रमण संस्कृति ऋषभदेव को मानती है, जबकि वैष्णव उसे ब्रह्मा, विष्णु और शिव को मानती है, वास्तव में वह सब एक ही है । ऋषभदेव (ब्रह्मा) जो ज्ञान का भंडार थे, राजपाट ठुकरा कर सन्यासी बन गये, तो इनके साथ 4000 भव्य आत्माओं ने भी सन्यास ग्रहण किया जो ऋषि कहलाए, ऋषभ से ही ऋषि परम्परा आरम्भ हुई। समस्त ऋषियों ने ऋषभदेव (ब्रह्मा) से ज्ञान अर्जित किया जो श्रुतज्ञान कहलाता था। ऋषभदेव (ब्रह्मा) मौन रहते थे जिससे 400 दिन तक आहार-पानी ग्रहण नहीं किया और जो ऋषि थे, उन्होंने ज्ञान तो अर्जित किया परन्तु बिना आहार के सब ने अपने-अपने ढ़ंग से जीवन निर्वाह का रास्ता अपना लिया, कोई कंद-मूल, फला आहार आदि से परम्परा चलती रही जो धर्म बन गये। ऋषियों ने आश्रम बना लिये, जहाँ राजे- महाराजे अपने युवराजों को ज्ञान अर्जित करने के लिए ऋषियों के पास भेजते थे, जहाँ से वह युद्ध कला कौशल, राजनीति, न्यायनीति, मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र विद्या प्राप्त कर सत्यवादी, त्यागी, बलशाली और विश्वविजेता कहलाते थे। श्रमण संस्कृति आत्मार्थी जबकि वैष्णव ईश्वरवादी हो गई। इन सब में से राम-राज्य को उत्तम क्यों माना

जाता है, क्या वह भगवान राम का राज्य था, **नहीं, बिल्कुल नहीं।** जब महाराज दशरथ ने युवराज राम को राज्यभिषेक की घोषण की तब युवराज भरत ननिहाल गये हुए थे। महाराज दशरथ अपनी दैनिक चर्यानुसार महारानी कैकयी ने अपने दो वर मांग लिए। राम को चौदह वर्ष का बनवास और भरत को राज्य। चिंताग्रस्त महाराज दशरथ अपने कक्ष में लौट आए, दैनिक चर्यानुसार जब राम चरण वन्दना महाराज के कक्ष में गये, तो स्तब्ध रह गये महाराज की दशा देखकर, कारण जानना चाहा, महाराज शान्त, राम की विवशता पर कैकयी की बात बतादी, राम, बस ! इतनी बात, मैं तो जीवन भर बनवास में रह सकता हूँ, 14 वर्ष तो क्या, मैं अभी प्रस्थान करता हूँ। राम ने शाही वस्त्र त्याग दिए, जब सीता जी को पता चला, वह भी साथ चलने की जिद्द कर ली, जब लक्ष्मण जी को पता चला, मैं भैया को कैसे छोड़ सकता हूँ, तीनों बन को प्रस्थान कर गये। जब भरत लौटे, माता कैकेयी से मालूम हुआ, तो वाद- विवाद हो गया, भरत ने अस्वीकार कर दिया। अन्ततः कैकयी ने कहा- चलो राम को वापिस लेने चलते हैं, महाराज से आज्ञा लेकर कुछ जनता और सैनिक भी साथ हो गये। वन में पहुँचे, लक्ष्मण ने देखा तो उतेजित हो गया, क्या आक्रमण करने आ रहे हैं, राम ने शान्त किया, आगे बड़े, माता कैकयी रथ से नीचे उतरी, राम ने चरण स्पर्श कँर वन्दना की, भरत गले लग कर रोने लगा और वापिस आयोध्या

लौटने की प्रार्थना की, राम क्षत्रिय का धर्म निभाना ही मेरा कृत्तव्य है, वार्तालाप होता रहा, राम मेरी आज्ञा का पालन तुम्हारा कृत्तव्य है, राम ने भरत को तिलक लगाया और राज्यभिषेक किया। भरत यह राज्य आपका ही होगा, मैं सेवक बनकर कृत्तव्य पालन करूँगा। राम की चरणपादुका ले कर अयोध्या लौट आए। चरणपादुका को सिंहासन पर विराजमान कर, सेवक बनकर सारी व्यवस्था करने लगे, त्याग मूर्ति भरत ने शाही वस्त्रों का त्याग कर, प्रतिदिन गुप्तचरों से जनता के सकुशल समाचार पाकर साधारण अन्नग्रहण करना वह भी दिन में एक बार और भूमि पर शयन, राज्यकोष से कोई व्यय न करना, जनता भी त्याग का अनुसरण करने लगी, जिससे 14 वर्षों में राज्य में कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। **कुशल व्यवस्था ही राम राज्य कहलाया ।** यह आज से लगभग 11 लाख वर्ष पूर्व का समय था। हमारी वर्तमान हिन्दुत्व का पाठ पढ़ने वाली, जय श्रीराम का घोष करने वाली **राम राज्य को समझे ।**

सदियों की गुलामी के पश्चात 1947 में भारत लोकतन्त्र व्यवस्था का देश बना। जिसका अपना एक संविधान कें अन्तर्गत सारी व्यवस्था का पालन किया जाता है। संविधान कागज पर लिखी एक इबारत नहीं है बल्कि देश की सभ्यता-संस्कृति का भी वाहक है।, संविधान सुधारा जा सकता है, संशोधन किया जा सकता, लेकिन छला नहीं जा सकता। संकट के इस दौर में भी संविधान के इस स्वरूप में रखना ही उचित व्यवस्था है।

मुझे लिखने में शर्म आ रही है कि एक नैतिकता के आधार वाली संस्था के संचालक श्री मोहन भागवत जी कहते हैं कि हमें सकारातमक दृष्टि चर्चिल की तरह अपनानी चाहिए, जबकि इस समय भारत की अधिकांश जनता नहीं जानती होगी चर्चिल कौन था? चर्चिल महा क्रूर और महाझूठा बरतानियां का प्रधानमन्त्री था, जो भारतियों को अपमानित कर कुत्तों के समान समझता था। द्वितिय महायुद्ध में बरतानियां सेना में 23 लाख भारतीय जवान थे, जो स्वामी भक्त एवं देश भक्त थे, जबकि भारतीय सैनिकों को अन्य सैनिको से कम वेतन दिया जाता था। जब जर्मन की फौजे आगे बढ़ती थी और भारतीय जवान रूस और जर्मन की फोजों के सामने डट जाते थे उस समय की कहावत थी – कदम जर्मन के बढ़ते हैं, फतह ईंगलिश की होती है। लगभग आधी भारतीय जवान सेना लोहा लेती शहीद हो गई और बरतानियां का विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित हुए। इस समय केन्द्र सरकार

और भाजपा राज्य भी सकारात्मक दृष्टि अपनाए हुए महामारी के संकटकाल में कहते है सब ठीक है। डेढ़ वर्ष से विश्वभर में कारोना महामारी का तांडव छाया हुआ है और भारत भी अछूता नहीं, इसके लिए **मैं देश की सरकार को दोषी नहीं मानता**, परन्तु उसकी रोकथाम के लिए उचित व्यवस्था न कर पाना समय से पूर्व कारोना मर गया, पांच राज्यों में चुनाव रैलियां, चार महीनों से धार्मिक कुम्भ में 90 लाख श्रद्धालुओं का संक्रमित होना और देश में कारोना का प्रसाद से महामारी की दूसरी लहर की चेतावनी वैज्ञानिकों की परामर्श न मानना, **केन्द्र सरकार पूर्णतः विफल रही** । गुजरात में सरकारी आंकड़ो अनुसार 4100 कोविड से मृत्यु हुई 25 दिन में जबकि आठ नगर निगमों ने 123000 मृत्यु प्रमाण पत्र दिए, यू. पी. के नगरों में जो भयावय दृष्य देखने को मिले, न दवाईया, न आक्सीजन न हस्पतालों में बैड, चोरबजारी का तांडव, शमशान घरों और कब्रस्तानों में दो गज जमीन भी नसीब नहीं हो रही, गांवो की हालत और दयानीय, वहां तो पैरासिटमोल भी उपलब्ध नही और शवों को गंगा-यमुना में बहाया जा रहा है, जहां से 2000 शवों को कुत्ते, गिद्ध-कौवे नोच रहें हैं और भगवे योगी जी कहते हैं सब ठीक है और रामदेव आक्सीजन और ऐलोपैथिक का मजाक भगवा पहनकर सनातन संस्कृति को कलंकित कर दिया। कुछ भाजपा सांसद आधुनिक भारत में गौमूत्र से महामारी दूर करने के उपाय बता रहे हैं, कहीं यज्ञ कराए जाते हैं। मैं मानता हूँ कि दुआ सहायक होती है दवा के

साथ। 2014 से 15 AIMS लटके हुए हैं फंडस की कमी से, जबकि चायवाले प्रधानमन्त्री को 16 हजार करोड़ का विमान उपलब्ध करवाया गया और Central vista के लिए 23000 करोड़ के लिए काम दिन-रात चल रहा है, जिसे ऐमरजैंसी सर्विस में रखा गया है। श्री मोदी जी अपने-आप को धार्मिक सिद्ध करने में कोई कमी नहीं रखते, केदारनाथ एव अन्य मन्दिरों की पूजा अर्चना के लिए, गुरुद्वारा शीशगंज में नतमस्तक होना मीडिया-फोटोग्राफर द्वारा प्रचार समस्त मंत्रीमंडल द्वारा चमचागिरी से व्यवस्था चरमारागई और छः महीने से किसान आन्दोलन पर नजर नहीं जाती। कभी धर्म के नाम जय श्री राम के नाम पर सामाज का वर्गीकरण, जब बंगाल में श्री राम भी साथ छोड़ गये तो सकारात्मक दृष्टि राज्य का विषय हो गई। लोकतन्त्र देश धर्म से नहीं उचित व्यवस्था से चलता है। आपके वित्तमन्त्री श्रीमति सीतारमण के पतिदेव और मोदी की माला जपने वाला और भाजपा सांसद का पतिदेव अनुपमखेर भी कहने लगा- सरकार फेल हो चुकी है, तड़पती जनता देखी नही जा सकती, व्यवस्था ठीक करो। यू.पी के गाँवों की दशा अत्यन्त दयानीय है, भारत समाचार के पत्रकार व कैमरामैनों ने गांव वालों से समाचार पूछा- तो पता चला प्रत्येक गांव में घर-घर बिमारी फैली हुई है और 5 मई से पूर्व कोई सरकारी कर्मचारी ने कभी सुध नहीं ली, हर गांव में 10 से 25 तक मृत्यु हो चुकी है. कहीं किसी गाँव में

प्रसव केन्द्र व हस्पताल थे परन्तु चार-पांच साल से कभी कोई स्वस्थ कर्मचारी नहीं दिखे, यहां तक एक-दो हस्पताल इमारतों को गांव वालों ने उपले का भंडार बना रखा है, जबकि मुख्यमन्त्री योगी जी कहते हैं सब ठीक है। अति दुःखदायी वकत्व्य फिर श्री मोहन भागवत जी ने दिया, कहते है कारोना से मरने वाले मुक्ती पा गये, जबकि उनके परिवार वालों से संवेदना प्रकट करते और दुःख की घड़ी में उन्हें ढ़ांढ़स ,सहानुभूति और हौंसला की प्रेरणा देते।

विज्ञान मन्त्रालय को गायत्री मन्त्र पर शोध करने के लिए कहा गया है, अच्छी बात है, परन्तु कुछ महीने पहिले एक मुस्लिम युवक ने संस्कृत में M.A.,P.hd की और बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी में कार्यरत हुआ, अफसोस उसे वहां से त्यागपत्र देना पड़ा। धर्म का उदेश्य है, मानवता, मानवता के बिना धर्म और देश नहीं चल सकते।

धर्म देश से चलता है और यह मानव के उत्थान का विषय है, धर्म भय से, दंड से, कानून से नहीं चलता, धर्म से हम किसी के सम्प्रदाय व व्यवहार नहीं बदल सकते, हम धर्म से हृदय परिवर्तन कर सकते हैं, प्यार से, तर्क से जिससे अधर्मी को धर्म के पथ पर लाया जा सके। मैं दो उदाहरण बतला रहा हूँ-

1945 में स्यालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में स्थानकवासी जैन समाज के सन्त स्वामी प्रेमचन्द जी महाराज का चातुर्मास था, वह अपनी धर्म सभा खुले चौराहों में प्रतिदिन प्रातः 8 से 9 बजे तक लगाते थे, वह धर्म के साथ सामाज सुधारक भी थे, चारों तरफ से आने-जाने वाले जब कुछ सुनते थे, जिसमें आर्यसमाजी, सनातनी, सिक्ख एवं मुसलमान भी होते थे, कुछ मुसलमान एक ही मोहल्ले के प्रतिदिन श्रवण करने लगे, भाषण अच्छा लगा और विचार करने लगे कि एक भाषण अपने मोहल्ले में करवाया जाए। एक दिन प्रवचन सभा के पश्चात जब महाराज जी स्थानक मे पधारे, तो कुछ मुस्लिम युवक भी पधार गये, सलाम किया और कहने लगे बाबा जी हम अपने मोहल्ले में एक लैक्चर चाहते हैं, महाराज श्री जी, जरूर मेरा तो काम ही एबादत करना है, बोलो कब । दिन निश्चित हो गया। उन मुसलमान युवकों ने हाथ से उर्दू में लिखकर कुछ पोस्टर लगा दिए और प्रवेश पर एक आना फीस लगा दी। जब वह कुछ जैन भाईयों ने पढ़ा, तो महाराज श्री जी को सूचित किया, महाराज जी ने कहा बुलाओ उनको, जब वह आए तो पूछा कि आप ने एक आना टिकट क्यों रखी है। बाबा जी हमारे मोहल्ले में एक जगह है हम उस पर एबादत के लिए मस्जिद बनानी चाहते है, जिसके लिए कुछ पैसे इकट्ठे हो जाए, महाराज श्री जी, मस्जिद जरूर बनेगी, आप टिकट हटा दिजीए। महाराज श्री जी ने अगले ही दिन घोषणा कर दी इस दिन प्रवचन मुस्लिम मोहल्ले में होगी, आप

सब ने वहाँ पहुँचना है और यथा शक्ति दान देना है। समय आने पर महाराज श्री जी वहाँ पहुँच गये, दमदार भाषण हुआ, लगभग 300-350 जैन सदस्य एवं अन्य थे बाकी मोहल्ले की मुस्लिम समाज, प्रवचन समाप्त हुए, सब ने वहाँ दान के लिए एक परात रखी हुई थी, सब ने दान दिया, किसी ने एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, दस रुपया के नोट डाल दिए, कुछ महानुभावों ने 100 के नोट भी डाल दिये। महाराज श्री जी प्रवचन देकर स्थानक में आ गये। जब वहाँ के सदस्यों ने नोट गिनती की तो 700 से अधिक हो गये, उनकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसी दिन बाद दोपहर वह शुक्रिया अदा करने आ गये। महाराज श्री जी, मैं अभी चार महीने यहाँ हूँ, आप शीघ्र मस्जिद का निर्माण करें और पहली एबादत मैं ही करूँगां। कहते कहते महाराज श्री जी उपदेश देने लगे, वह भी कुरान की आयतों के अनुसार जीव दया पर, सब ने श्रवण किया और कुरान की बातें समझकर दो सदस्य खड़े हो गये और कहने लगे आज से हम मांस भक्षण नहीं करेंगे, प्रण करते हैं कि सारे सदस्यों ने कसम खा ली और कहा- कुछ दिन तक बकरीद आने वाली है, हम यकीन दिलाते है कि उस दिन हमारे मोहल्ले में कोई जीव हिंसा नहीं होगी। उन्हों ने अपना हृदय ही बदल लिया।

एक अन्य उदाहरण भी लगभग उसी जमाने का है जोधपुर राजस्थान में जैन सन्त श्री मयाराम जी महाराज का

चातुर्मास था, रात को कुछ भाई धर्म लाभ लेने आ जाते थे। श्री मयाराम जी महाराज की आवाज इतनी सुरीली थी कि वह रात को रामायण सुनाया करते थे, लगभग 50-60 धर्मप्रेमी प्रतिदिन होने लगे। एकदिन पड़ोस में किसी के लड़के की शादी थी और वहाँ राईस आदमी डांसर (वेश्या) को बुलाते थे, अन्य जनता देखने के लिए एकत्रित होती थी, लोग उनका नोटों से वारना करते थे। एक सदस्य महाराज श्री जी के पास आया और कहने लगा-आज तो कोई नहीं आएगा, क्यों, उसने सारी बात बता दी। महाराज श्री जी- तुम भी जाओगे, नहीं महाराज मैं तो यहीं आपके पास रहुँगा, लो सुन- महाराज श्री जी ने उँचे स्वर से रामायण सुनानी शुरू कर दी, बस फिर क्या वहाँ से लोग उठ कर स्थानक में आने लगे और वहाँ स्थान खाली हो गया, वेश्या हैरान हो गई, आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ, वह भी सुनने लगी, जब सीता जी का प्रसंग आया तो उनका हृदय बदल गया, उन्होंने स्थानक जाना चाहा परन्तु जिस के घर शादी थी उसने कहा कि रात को नारियाँ वहाँ नहीं जाती, अगले दिन सुबह होते ही वैश्या महाराज जी को देखने चली गई, वार्तालाप किया, महाराज जी के पावन शब्दों ने जीवन बदल के रख दिया, और महाराज जी से कसम खाई जीवन भर ब्रह्मचर्य की और जीवन भर निभाया।

आज हमारे राजनीतिक इतने कुशल नहीं कि वह देश के भविष्य की बात करें, जिससे जनता उनका अनुसरण करे।

अधिकांश राजनीतिज्ञ स्वयं किसी अपराध में ग्रसित होते हैं और धर्म का हथियार बनाकर वोट बटोरने के लिए अनुचित ढ़ंग अपनाते है। फिर वह कोई पार्षद, विधायक एवं सांसद बन कर हमारे भावी अधिनायक बन जाते हैं। मेरा देश के प्रधामन्त्री जी से निवेदन है कि स्वच्छ भारत के लिए स्वच्छ राजनीति आवश्यक है। हमारा राष्ट्रीय गान- जन गण मन अधिनायक जय हो, भारत भाग्य विधाता। देश की जनता, सभी राज्य अपने मन से आपको अपना नेता मानती है और मार्गदर्शक जिससे भारत की जनता का जीवन निर्माण हो सके। इसमें समस्त विपक्ष भी आ जाता है, जिसको आपके प्रचारक सदैव दुश्मन ही समझते है।

कृपया अपने चश्में के बदले लैंस।

जनता का जीवन न बने इंशोरैंस।

जनता को हो रहा है जीरो बैंकबैलेंस।।

भक्त को अधिकार है भगवान को उलाहना देना, इस लिए लोकतन्त्र में देश के नागरिक को अधिकार है, नेताओं की गलती उजागर करने का, परन्तु यू.पी मे क्या हो रहा है, यदि कोई विरोध करे तो देशद्रोह में ठोक दो, या काउँटर आटैक में खत्म कर दो। **माँ गंगा बुला रही है, मोदी को बतला रही है,**

मोदी तेरी गंगा दूषित हो गई, कारोना के शव ढ़ोते ढ़ोते।

स्त्री पुरुष बच्चे वूढ़े नौजवान पुकार रहे हैं रोते रोते।
न दवाईयां, आक्सीजन बैड चिल्ला रहे हैं अपनो को खोते खोते

आज का भारत

आज की बात करने से पूर्व थोड़ा सा ध्यान आज से 125 वर्ष पूर्व पर ले जाना चाहता हूँ। एक अंगरेज लेखक लारैंस अपनी पुस्तक द वैल्सी ऑफ काश्मीर में लिखते है कि उन्हें अपने जीवनकाल में बहुत समय काश्मीर में रहना पड़ा और वहाँ हिन्दु-मुस्लिम में कैसा प्रेम सम्बन्थ था, दोनों कितने एक दूसरे के नजदीक थे। मुस्लिम समाज ने चाहे मुस्लिम धर्म काबूल किया हुआ था परन्तु हृदय से वह हिन्दु ही थे। वह सब मिल कर एक –दूसरे के धर्म का पालन करते थे और मनाते थे। वहाँ कभी गौ वध नहीं होता था, डोगरा वंश का राज्य था, जगह जगह हिन्दु मन्दिर थे, जहाँ मुस्लिम भी श्रद्धा से जाते थे और वह मानते थे कि हमारे पूर्वज तो हिन्दु ही थे। 1989 तक सब ठीक था, भारत का कोई नागरिक वहाँ का नागरिक नहीं हो सकता था। 1989 में पहली बार मुफ्ती मोहम्मद साईद राज्य सभा से डिसक्वालिफायर किया गया और अपनी पार्टी बनाई और काश्मीर में अपना वर्चस्व बढ़ाया जिसमे anti social element को साथ लिया और जिहाद का प्रचार से हिन्दुओं पर अत्याचार का सिलसला शुरू हुआ।कुछ anti social element के सदस्य पकड़े गये, जेल में थे परन्तु मुफ्ती से अच्छे सम्बन्ध थे। केन्द्र में वाजपाई सरकार आई और मुफ्ती जी गृहमन्त्री पर आसीन हो गये। अपनी ही बेटी रूबीया का अपहरण करवा anti social element के नामी अपराधियों को छुड़वाकर

पाकिस्तान भेजा गया। जिसका आंतकवाद आज तक हम झेल रहें हैं और नफरत की आग समस्त भारत में फैल गई। एक उग्रवादी काशमीर में मारा गया और उसका ही एक भाई पूर्वी भारत में I.A.S.आफिसर था। 2014 में मोदी सरकार केन्द में आई और काशमीर के मुख्यमन्त्री थे मुफ्ती का देहांत हो गया और भाजपा ने महबूबा मुफ्ती के साथ सरकार बनाई, महबूबा मुफ्ती का दिल और दिमाग तो कट्टरपंथियों के साथ है और रहेगा, इसलिए भाजपा ने साथ छोड़ दिया परन्तु कुछ स्वार्थी नेताओं ने अपनी पार्टिया बना ली और धर्म के ठेकेदार बन वर्गीकरण होने लगा। पाकिस्तान ने ऐटमी शक्ति का रोब देना शुरू कर दिया और बड़ी सोची समझी नीति से सूसाईड बाम्बर आटैक पुलवामा में करवाया गया जिस बस में भारत के अनेक राज्यों के जवान थे, जब उनके शव उनके पैतृक गांव मे जाएंगे तो सारे भारत में हा-हाकार मच जाएगी, परन्तु भारत के कुशल नेतृत्व में बालकोट स्ट्राईक ने पाकिस्तान को पटकनी दे दी। हमारा कामाण्डर अभिनंदन उनके हाथ लग गया, दुविधा मे पड़ गये यदि न छोड़ा तो भारत एक बड़ा हमला कर सकता है, भय सताने लगा कि सकुशल छोड़ दिया। बालकोट स्ट्राईक से भारत की राजनीति ने डबल लाभ प्राप्त किया, एक तो पाकिस्तान ऐसी हरकतों से घबरा गया और दूसरा भाजपा ने चुनाव में भरपूर लाभ लिया। केन्द्र में 35 वर्ष के पश्चात बहुमत वाली सरकार बनी और गृहमन्त्री बने अमितशाह जी। **अब आज के भारत का इतिहास आरम्भ होता है।**

ग्रैंड ओल्ड पार्टी कांग्रेस दिन ब दिन अपना वर्चस्व खो रही है, क्योंकि कांग्रेस प्रधान ने अपने ही कुशल वक्ताओं को आगे आने

नहीं दिया और परिवार मोह के कारण अन्य नेता बिखरने लगे। सब बहती गंगा मे हाथ धोने के प्रयास में राजनीति और धर्मनीति भूल जाते हैं। जबकि चाहिए था 1895 के समय का काश्मीर वातावरण हम समस्त भारत में पैदा करते, हो सकता था और है भी परन्तु स्वार्थी नेताओं ने ऐसा नहीं होने दिया बल्कि वातावरण और दूषित कर दिया। भारत के दो पड़ोसी देश मुस्लिम समुदाय़ के, दो बुद्ध धर्म के अनुयायी एक कम्युनिस्ट विचारधारा और नेपाल हिन्दु संस्कृति का पक्षधार। भारत की 18% जनता इस्लाम मान्यता की है जबकि इनका व्यापारी वर्ग शांती और भाईचारे को महत्व देते है, जो राजनीति से सम्बन्ध रखते हैं वह है कोबरा।

दुर्भाग्य से 2020 में समस्त विश्व में महामारी कोविड-19 का प्रकोप हुआ, भारत भी अछुता नहीं रहा परन्तु प्रधानमन्त्री श्री मोदी जी ने तुरन्त ल़ॉकडाऊन पूरे देश में लगाकर फैलने से रोका जो लम्बा चला, उसमें जनता को कई तरह की मुसीबतें झेलनी पड़ी, लाखों लोगों की नौकरियां छूट गई, छोटे व्यापार और उद्योग बन्द हो गये। गरीब मज़दूर दिहाड़ीदार को दो वक्त का खाना मुश्किल हो गया, केन्द्र , राज्य सरकारें और दानवीरों ने यथाशक्ति सहायता की। छः सात महीनों के बाद संक्रमण घटना शुरू हुआ, स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय सब बन्द रहे, बच्चों की शिक्षा का नुकसान भी हुआ, उधर विज्ञानिकों एवं चिकितस्कों ने भरपूर परिश्रम से वैक्सीन तैयार कर ली विश्वगुरु बनने के चक्र में वैक्सीन का निर्यात भी किया और केन्द्र सरकार का स्वस्थ मन्त्रालय प्रचार में लग गया कोरोना समाप्त हो गया, जबकि

वैज्ञानिकों एवं चिकितस्कों ने चेतावनी दी महामारी की दूसरी एवं तीसरी लहर भी आ सकती है। पांच राज्यों में चुनाव एवं बिहार और यू.पी में पंचायती चुनाव की घोषणा करवा दी, तीन राज्यों में एक दिन, आसाम में तीन बार में और बंगाल में आठ भाग में 27 मार्च से 27 अप्रैल और दो मई को परिणाम, बढ़-चढ़ कर रैलियाँ कारोना प्रोटोकॉल दरकिनार कर केन्द्र सरकार समस्त मन्त्रालय छोड़ बंगाल में डेरा डालकर बैठ गये और वहाँ धर्म के वर्गीकरण करने की निचले स्तर की राजनीति देखने को मिली, प्रधानमन्त्री ने भी अपने पद की गरिमा को ताॅक पर रख दिया और महामारी अपना भयंकर रूप लेकर प्रकट हुई, **आग लगने पर कुँआ खोदना** जैसी मूर्खता हमारी केन्द्र सरकार ने की और सब कुछ राज्य सरकारों पर छोड़ दिया। जिससे कोरोना वायरस ने मानों मानव प्राणों को घोंट सा दिया, चारों ओर मृत्यु का वातावरण ही नजर आने लगा, महामारी विषैले रूप में प्राण हरते अदृष्य शत्रु की भांति समाज में पनप चुकी हैं। जिससे समाज की जड़ें हिल गई, मानसिकता खोखली हो गई, आमदन के रास्ते बंद हो गये और बिमारी के खर्चे बहुत अधिक, कुछ दवाईयां और आक्सीजन की चोर बजारी बढ़ गई, हस्पतालों में बैड की व्यवस्था नहीं रही, स्वस्थ कर्मी स्वयं दुःखी हो रहे है। अब चारों तरफ देखें तो नजर आती हैं लाशें, ऐम्बूलैंस मिलते नहीं, मिल जाए हजारों में दाम मांगते है, शमशान घाटों में वेटिंग चल रही है, कहीं दाह संस्कार के लिए लकड़ी नहीं मिल रही, यह देश के महानगरों का हाल है, गांव की तो बात मत पूछिए। इसमें पांच राज्य डबल ईंजन वाले हैं, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार और गोवा। उत्तराखंड के अल्मोड़ा में हस्पताल

की छत बारिश में टपक रही थी जैसे अन्दर ही बारिश हो रही है। बलिया में एक शव को पैट्रोल डालकर टायरों से संस्कार किया। कहाँ गई हमारी सनातन संस्कृति और सरकारें कहती है सब कुछ ठीक है। जब वैक्सीन की तैयारी हो रही थी, तो आदरणीय प्रधानमन्त्री जी ऐसे जाते थे कि उनकी देखरेख में ही काम चल रहा है। देश के वित्तमन्त्री ने 35 हजार करोड़ वैक्सीन के लिए आबंटित किया, जब बनकर तैयार होगया तो राज्य सीधा खरीदें। कहाँ गया वह 35 हजार करोड़। प्रधानमन्त्री मोदी जी निश्चित तौर पर बड़ीं-बड़ीं बातें करते है कि भारत एक ऐसा देश है जिसने कभी हिम्मत नही हारी, हम लड़ेगें और विजयी होगें, शब्दावली बहुत अच्छी है परन्तु एहसास होना चाहिए कि जमीनी स्तर पर ठोस चिकित्सक व्यवस्था है, जब महानगरों मे दुर्दशा है तो गांवो में जहां 70% अबादी रहती है, वहां न हस्पताल, न दवाईयां और धर्म के नाम पर अंधी गलियों में भटक रहे हैं। सरकार का काम कम और प्रचार ज्यादा, देश को वायदा।

डाक्टरों की चेतावनी के बाद भी शीर्ष नेता अपना कृत्तव्य निभाने में विफल रहे, जब कि उनका काम था संकट में देश की जनता को सही दिशा-निर्देश देना । मोदी जी को अपनी वाह-वाही प्राप्त करने का अधिक शौक है, जिससे वह जूमले और रूप परिवर्तन रविन्द्रनाथ टैगोर का रूप धारण करते हैं, काश कि वह रविन्द्रनाथ टैगोर के आदर्श को धारण करते- Where the mind is without fear. जिससे बंगाल की जनता ने बतला दिया, बातों से, खोखले वायदो से, धर्म के नाम पर जनता नही ठगी जा

सकती। सही मार्ग आलोचक ही बताते हैं, उन्हें आप देशद्रोही कहते हैं। जैसे गुबारे में हवा भरी जाए, यदि अधिक भरी जाए तो विनाशकारी हो सकती है, ऐसे ही आपका मन्त्रीमंडल आप के गुणगान से आपको पथभ्रष्ट कर दिया। मेक इन इंडिया के नाम भिखारी बना दिया।

शव वाहिनी गंगा कितनी पवित्र एवं सुपर सप्रैडर

जब संकट सर पर मंडरा रहा था तो हरिद्वार में धार्मिक कुंभ के आयोजन की तैयारियां दिन-रात चल रही थी और 90 लाख श्रद्धालुओं ने गंगा मे डुबकी लगाई, कोरोना परोटोकाल की अनदेखी की गई, स्वस्थ सेवाओं को भूला दिया गया, जब संक्रमण विस्फोट हुआ तो आठ-दस सन्त महाराज भी कोरोना का ग्रास बन गये, शेष श्रद्धालुओं ने देश के गांव-गांव में कोरोना प्रसाद बांटा। जबकि गांवों मे न उपचार न सावधानियां और तंग छोटे मकान में क्वारानटाईन की व्यवस्था न होना संक्रमण ने प्रचंड रूप धारण कर प्रत्येक गांव में हर घर में बिमारी और मृत्यु, जहाँ तक कि शमशानघाट में दाह संस्कार के लिए लकड़िया खत्म और मंहगी हो गई जिससे मृत शरीर नदियों मे बहाए जाने लगे। जिससे सनातन परम्परा ध्वस्त हो गई । गंगा की पवित्रता महामारी का रूप धारण कर सुपरस्प्रैडर हो गई। गंगा से पवित्र तो भाजपा हो गई, जो भ्रष्ट विधायक, सांसद जिन्हें E.D & C.B.I. ने पूछ-ताछ में अपराधी पाया वह भाजपा में आ जाएं तो 100% शुद्ध हो जाते हैं। यदि कोई आवाज उठाता है तो प्रधानमन्त्री की छवि खराब भाजपा का राष्ट्रीय प्रवक्ता संवत

पात्रा विपक्ष को दोषी ठहराता है, जबकि सैटेलाईट पर विश्व के मीडिया ने लाईनों में जलते शव, नदियों के घाटों पर कुत्ते नोचते शव के फोटो विश्व के सभी बड़े समाचार पत्रों ने प्रकाशित किये।

मेरा भारत है महान, बिमारी में ईलाज नहीं न मरने पर शमशान

बेटे के कारनामे मां पहले से जानती है

आज भारत को आवश्यकता है- युनिफार्म सिविल कोड की

इस समय हमें ग्रामीण और शहरी भारत में आधुनिक स्वस्थ **सेवा**ओं को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है, भारत के हर छोटे गांव में एक प्रसूति गृह और OPD की व्यवस्था और दस-पन्द्रह गांव पर एक अच्छा हस्पताल, जिसमें आक्सीजन और वैंटीलेटर एवं डायलसिस की सुविधा मिल सकें। ग्रामिणों को धर्म के पचड़े से बाहर निकाल कर स्वस्थ सेवाएं प्रदान हो, शिक्षा के लिए स्कूल-कालेज, लम्बे समय से धर्म के नाम पर कुरीतियों को समाप्त कर देश में सामान्य नागरिक आधिनियम की आवश्यकता है और जनसंख्या नियन्त्रण समाज के लिए हर वर्ग को अवगत करवाना। जिससे हम सब पहिले भारतीय फिर धर्म। धर्म तो सब समुदायों का मानवता है परन्तु भ्रष्ट राजनीति ही अपने स्वार्थ के लिए धर्म का ढ़िढ़ोरा पीटते है और समाज का वर्गीकरण कर लाभ उठाते है। प्रत्येक राज्य में दैविक प्रकोप के लिए डिजास्टर मैनेजमैंट विभाग का गठन हो, जो किसी आपदा को निपटाने में तत्काल कार्यरत हो जाए और आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाने में सक्षम हो। यदि श्री मोदी जी इस अवसर का लाभ उठा सकते हैं तो विश्व गुरु बन सकते है अन्यथा झूठी वाहवाही महान नहीं बना सकती, कोई किसी की छवि न बना सकता है न बिगाड़ सकता है। नेता का चरित्र ही पहिचान है। **जय भारत**

सत्यमेव जयते। सत्यमेव जयते।

स्वतन्त्र जैन जालन्धर

9855285970 swatantarjain@gmail.com 22.5.2021